शोध –प्रस्ताव

खोरठा गद्य साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना :- एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पीएच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप की रूपरेखा

स्नातकोत्तर खोरठा विभाग,

राँची विश्वविद्यालय, राँची

संकाय : जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

वर्ष– 2025

शोध निर्देशक

डॉ0 रितु घाँसी
सहायक प्राध्यापक
खोरठा विभाग
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
राँची वीमेंस कॉलेज, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची
ईमेल–ritughansi2011@gmail.com
मो0–8877160251

शोधार्थी

शिव कुमार दाँगी
यू0जी0सी0 नेट/जे0आर0एफ0
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची
ईमेल–shiv29thaug@gmail.com
मो0–9155666299

"खोरठा गद्य साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना :- एक विश्लेष्णात्मक अध्ययन"

झारखंड एक बहुप्रजातीय, बहुसांस्कृतिक तथा बहुभाषिक प्रदेश है। झारखण्ड में अध्ययन– अध्यापन की दृष्टिकोण से जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय में कुल नौ भाषाओँ की पढाई होती है। इनमे से पांच जनजातीय भाषाएँ एवं चार क्षेत्रीय भाषाएँ शामिल है।

खोरठा में एक कहावत प्रचलित है "सात कोस पर बदले पानी, चार कोस में वाणी" अर्थात हमारा राज्य विधताओं से भरा – पूरा है। यहां की वेशभूषा, खान–पान, रहन–सहन, सांस्कृतिक व सामाजिक परिवेश के साथ–साथ भाषा में भी विविधता देखने को मिलता है। इन विविधताओं के बीच हमारे झारखंड की एक प्रमुख क्षेत्रीय भाषा खोरठा जिसका प्रभाव लगभग 15 जिलों में है। यह भाषा केवल सदानों तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि गैर सदानों व आदिवासियों की एक संपर्क भाषा के रूप में भी इसका व्यवहार किया जा रहा है। खोरठा भाषा साहित्य का भंडार रचनाओं से भरपुर है क्योंकि प्राचीन काल से ही खोरठा भाषा की साहित्यकारों ने सभी विधाओं में अपनी रचनाओं से इसको समृद्ध करते आ रहे हैं। वर्तमान में नए–नए साहित्यकारों ने भी अपनी रचनाओं में खोरठा साहित्य के लिए सभी विधाओं को और भी समृद्ध करने का काम कर रहे हैं। आधुनिक साहित्यकारों में प्रमुखता श्रीनिवास पानुरी, डॉ.ए.के. झा, विश्वनाथ दसौंधी राज, शिवनाथ प्रमाणिक, सुकुमार, प्रो.डॉ.शशि कुमारी, प्रो.डॉ. विनोद कुमार, डॉ.चतुर्भुज साहु, , डॉ अर्चना कुमारी, डॉ. निरंजन कुमार, डॉ. दिनेश कुमार दिनमणि, वंशीलाल वंशी, डॉ. बी. एन.ओहदार, अरविंद कुमार, शांति भारत, , महेश गोलवर, प्रदीप कुमार, विश्वनाथ प्रसाद नागर, संतोष कुमार महतो, श्याम सुंदर केवट, गिरिधारी गोस्वामी, डॉ. गजाधर महतो, इम्तियाज गदर,, मानपुरन गोस्वामी, शिवनंदन पांडे, बसु बिहारी, धनपत महतो, परितोष कुमार प्रजापति, कृष्ण चंद्र दास, जनार्दन गोस्वामी, चितरंजन महतो चित्र, आदि

साहित्यकारों ने अपने अमूल्य रचनाओं से खोरठा साहित्य को और भी समृद्ध करने का प्रयास करते आ रहे हैं।

समाज और साहित्य एक सिक्के के दो पहलु है, अर्थात् एक दुसरे के पूरक है जिसके कारण ही साहित्य को समाज का दर्पण भी कहा जाता है। हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं का छाप हमारे साहित्य में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलता है। साहित्य जीवन की अभिव्यक्ति है मानव जीवन और समाज में पूर्णतया संबंध है अतः साहित्य अपनी युगीन भावनाओं की अनुकृति होती है। साहित्यकार समाज के जागरूक पहरेदार होने के कारण उनकी रचनाओं में परोक्ष व अपरोक्ष रूप से समाज की संस्कृति परिस्थितियों एवं गतिविधियों का चित्रण होना सहज ही संभव है, साहित्यकार अपनी वाणी में समाज की पुकार को प्रश्रय देकर राष्ट्र के पथ को नई दिशा से आलोकित करता है

अनुसंधान के क्षेत्र में खोरठा साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना की छवि ओझल हो रही है। खोरठा साहित्य में खोरठा शिष्ट काव्य पर अभी तक कोई विशेष अनुसंधान उपलब्ध नहीं है, जिसके कारण प्रस्तुत शोध प्रबंध इस अभाव को दूर करने की दिशा में एक विनम्र प्रयास मात्र है।

शोध विधि :–

- साक्षात्कार विधि
- अवलोकन विधि

- विश्लेष्णात्मक विधि
- प्रश्नावली विधि

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

किसी भी शोध समस्या के अध्ययन नए एवं आवश्यक आंकड़ों के एकत्रीकरण के लिए विभिन्न युक्तियों का प्रयोग करना होता है। इन आंकड़ों के संकलन के लिए सुव्यवस्थित कार्यनीति अपनाना आवश्यक है, परिणाम एवं गुणों की दृष्टि से पर्याप्त एवं यथोचित संबंधित आंकड़ों का संकलन किया जाना चाहिए। इन आंकड़ों में पर्याप्त विश्वसनीयता तथा वैधता का गुण होना चाहिए। इन आंकड़ों का संकलन करने के लिए जिन उपकरणों का प्रयोग किया जाता है उसे शोध उपकरण कहते हैं। इस शोध में प्रयुक्त उपकरण निम्न है :–

- प्रश्नावली
- कैमरा
- टेप रिकोर्डर
- कंप्यूटर एवं पेन ड्राइव
- पत्राचार
- इन्टरनेट
- मोबाइल
- पुस्तके
- कागज एवं कलम

सम्बंधित साहित्य का अवलोकन

शोध कार्य अपने आप में एक ऐसा कार्य है जो प्राप्त साहित्य तथा तथ्यात्मक सामग्री के विश्लेषण से घनिष्ठ संबंध रखता है। शोध का शाब्दिक अर्थ ही किसी पूर्ण प्राप्त सामग्री को उसके निष्कर्ष परिणाम निकालकर नवीन रूप देने से है। ज्ञान को एकत्रित करना ज्ञान में वृद्धि करना और ज्ञान को एक दूसरे तक पहुंचाना तब संभव है जब शोध में सार्थक परिणाम निकले। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप के प्रारंभिक अवस्था में इसके सैद्धांतिक अवस्था में शोध साहित्य का पुनः निरीक्षण करना होता है। प्रस्तावित शोध प्रबंध एकदम नया शोध विषय है। अब तक इस पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है परंतु प्रस्तावित शोध विषय से संबंधित खोरठा साहित्यकारों के अनेक पुस्तक प्रकाशित हैं। अब तक प्रकाशित शोध एवं उन पुस्तकों के द्वारा इस शोध विषय को संपन्न करने में मुझे आधार ग्रंथ के रूप में सहायता प्राप्त होगा।

शोध का औचित्य एवं महत्व :–

- मातृभाषा के प्रति लोगों का प्रेम एवं अपने संस्कृति के प्रति लोगों का रुझान बढ़ेगा।
- इस शोध प्रबंध के माध्यम से समस्त खोरठा भाषा– भाषियों, समाज के कवियों एवं साहित्यकारों का मान–सम्मान व पहचान बढ़ेगा।

- खोरठा साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक भाव के प्रति लोगों का झुकाव बढ़ेगा।
- खोरठा साहित्य के द्वारा लोगों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना को जागृत किया जाएगा।
- हमारे सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं को लोग जान सकेंगे ।

<u>शोध का उद्देश्य :–</u>

- खोरठा साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन करना।
- खोरठा भाषा साहित्य का गहन अध्ययन करना।
- खोरठा साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना आधारित रचनाओं को प्रस्तुत करना।
- खोरठा साहित्य और सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना के बीच संबंध का अध्ययन रखना।
- सामाजिक एवं सांस्कृतिक रचनाओं का अध्ययन करना।
- खोरठा साहित्य से जुड़े साहित्यकारों के कृतियों का अध्ययन करना।
- भविष्य में खोरठा साहित्य के शोधार्थियों के लिए सूचना संकलन, विश्लेषण, एवं निष्कर्ष प्रदान करना।

<u>अध्ययन का परिसीमन :–</u>

किसी भी बड़ी समस्या को छोटा रूप देने के लिए समस्या के क्षेत्र को सीमित करना अनिवार्य होता है अगर समस्या का क्षेत्र सीमित व सुस्पष्ट होगी तो समस्या का आकलन भी गहनता के साथ किया जा सकता है। शोध की विश्वसनीयता, वैधता तथा उपयोगिता के लिए यह जरूरी हो जाता है कि शोध के क्षेत्र को परिसीमित किया जाए। अतः शोधार्थी ने निम्न प्रकार से क्षेत्र को परिसीमित किया है–

- प्रस्तुत शोध को केवल झारखंड राज्य तक परिसीमित किया गया है।
- प्रस्तुत शोध को खोरठा साहित्य तक परिसीमित किया गया है।
- प्रस्तुत शोध को खोरठा साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना तक परिसीमित किया गया है।

शोध की परिकल्पना :

शोध परिकल्पना, किसी अध्ययन के अपेक्षित परिणामों के बारे में एक कथन है। यह एक अनुमान या विचार होता है जिसे सच या गलत साबित करने के लिए परखा जाता है। शोध परिकल्पना, वैज्ञानिक पद्धति में बहुत अहम होती है। यह किसी प्रयोग की नींव रखती है और एक सिद्धांत से ज्यादा केंद्रित होती है। इस शोध प्रबंध में खोरठा साहित्य में छुपी सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन किया जाएगा, इसके माध्यम से समाज के लोगों के बीच इन रचनाओं को विलुप्त होने से बचाया जा सकेगा।

शोध का समाज में प्रभाव :–

- प्रस्तुत शोध कार्य पूरा होने के पश्चात जब प्रकाशित होगी तो प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से समाज पर निम्न प्रभाव पड़ सकता है।
- खोरठा साहित्य के प्रति लोगों का रुचि व प्रेम बढ़ेगा।

- खोरठा भाषियों के ह्रदय में खोरठा साहित्यकारों के प्रति प्रेम एवं सम्मान की भाव उत्पन्न होगी ।
- लोगो में अपने समाज एवं संस्कृति के प्रति जिज्ञासा बढेंगी ।
- खोरठा साहित्य के माध्यम से लोगों के अंदर सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना को जगाया जा सकता है।
- साहित्य के माध्यम से समाज एवं सांस्कृति के प्रति लोग अपने कर्तव्य को समझ सकेंगे।
- खोरठा साहित्य के माध्यम से आपसी भाईचारा को बढ़ा सकेंगे।

प्रस्तावित अध्यायीकरण :–

प्रथम अध्याय :– खोरठा भाषा और साहित्य का सामान्य परिचय

1. खोरठा भाषा और साहित्य का संक्षिप्त परिचय
2. खोरठा भाषा और साहित्य का स्वरूप
3. खोरठा भाषा और साहित्य का क्षेत्र
4. खोरठा भाषा और साहित्य का वर्गीकरण

द्वितीय अध्याय :– सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का सामान्य परिचय

1. समाज की परिभाषा एवं स्वरूप
2. संस्कृति की परिभाषा एवं स्वरूप
3. चेतना का सामान्य परिचय, स्वरूप एवं प्रकार

तृतीय अध्याय :– खोरठा साहित्य के गद्य विधा के उपन्यास में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन

1. उपन्यास का उद्भव एवं विकास का अध्ययन
2. खोरठा उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय
3. खोरठा के प्रमुख उपन्यासकार एवं उनकी उपन्यास का अध्ययन
4. खोरठा उपन्यासों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन

चतुर्थ अध्याय :– खोरठा साहित्य के गद्य विधा के कहानियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन

1. कहानी का उद्भव एवं विकास का अध्ययन
2. खोरठा कहानियों का संक्षिप्त परिचय
3. खोरठा के प्रमुख कहानीकार एवं उनकी कहानियों का अध्ययन
4. खोरठा कहानियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन

पंचम अध्याय :– खोरठा साहित्य के नाटकों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन

1. नाटक का उद्भव एवं विकास का अध्ययन
2. खोरठा नाटकों का संक्षिप्त परिचय

3. खोरठा के प्रमुख नाटककार एवं उनकी नाटकों का अध्ययन

4. खोरठा नाटकों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन

षष्ट अध्याय :– खोरठा साहित्य के निबंधों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन

1. निबंध का उद्भव एवं विकास का अध्ययन
2. खोरठा निबंधों का संक्षिप्त परिचय
3. खोरठा के प्रमुख निबंधकार एवं उनकी निबंध का अध्ययन
4. खोरठा निबंधों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन

सप्त अध्याय :– खोरठा साहित्य के अन्य विधाओं में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन

1. खोरठा के यात्रावृतांत में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन
2. खोरठा के संस्मरण में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन

अष्ट अध्याय :– अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पत्र–पत्रिकाओं में खोरठा साहित्य के सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन

1. स्थानीय स्तर के पत्र–पत्रिकाओं में खोरठा साहित्य के सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन
2. राष्ट्रीय स्तर के पत्र–पत्रिकाओं में खोरठा साहित्य के सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन
3. अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पत्र–पत्रिकाओं में खोरठा साहित्य के सामाजिक एवं

सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन

शोध निर्देशक

डॉ0 रितु घाँसी

सहायक प्राध्यापक

खोरठा विभाग

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग

राँची वीमेंस कॉलेज, राँची

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

शिव कुमारदाँगी

यू0जी0सी0 नेट / जे0आर0एफ0

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

आधार ग्रंथों की सूची :–

- कुमार, डॉ० अरबिन्द, धुंगा, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह बोकारो, 2007
- कुमार, डॉ० बिनोद धोवइयाक धमक, झारखण्ड झरोखा, रातू रोड रांची 2022
- गदर, इमतियाज सुरमनी सानी प्रकाशन गोमो, धनबाद 2010
- गोस्वामी, जनार्दन व्यथित, खटरस, बालीडीह खोरठा कमिटि बालीडीह बोकारो, 2004

- गोस्वामी, महेन्द्रनाथ सुधाकर, जोंक, झारखण्ड झरोखा, रातू रोड रांची, 2015
- दसौंधी, विश्वनाथ 'राज', अजगर, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो, 2004
- दसौंधी, विश्वनाथ 'राज,' भगजोगनी, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो 2004
- दास, पी० सी०, नचनी काकी बालीडीह खोरठा कमिटि, बालीडीह बोकारो, 2013
- प्रबुद्ध, महेन्द्र, तीन काठ धान, उषा पब्लिशिंग हाउस, धनबाद, 2007
- प्रबुद्ध, महेन्द्र, झुमरीतिलैयाक चंपा, उषा पब्लिशिंग हाउस, धनबाद, 2011
- प्रबुद्ध, महेन्द्र, बुद्धम शरणम गच्छामि, उषा पब्लिशिंग हाउस, धनबाद, 2016
- महतो, पंचम, फरीछडहर, बालीडीह खोरठा कमिटि, बालीडीह बोकारो, 2001
- महतो, चितरंजन 'चित्रा', छाँहइर, खोरठा भाषा साहित्य संस्कृति अकादमी, रामगढ़, 2007
- राम, डॉ० डी०सी०, ढरकल लोर, खोरठा भाषा साहित्य संस्कृति अकादमी, रामगढ़, 2008

संदर्भ ग्रंथों की सूची :—

- ओहदार, डॉ. बी.एन., खोरठा भाषा एवं साहित्य (उद्‌भव एवं विकास), मार्गदर्शन पब्लिकेशन, अपर बाजार, राँची, 2007

- कुमारी, डॉ० अर्चना, खोरठा शिष्ट साहित्यः एक अध्ययन, प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन, राँची, 2015
- गदर, इमतियाज पारसनाथ, झारखंड झरोखा, रातू रोड, राँची, 2016
- गदर, इमतियाज अलीपुर, सानी प्रकाशन, गोमो, धनबाद, 2013
- गदर, इमतियाज बेचारा मास्टर, सानी प्रकाशन गोमो, धनबाद 2014
- गोस्वामी, जनार्दन व्यथित उजडल खोंधा, बालीडीह खोरठा कमिटि, बालीडीह, बोकारो, 2007
- गोस्वामी, मनपूरन परासचित, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो,2006
- तिवारी, डॉ. उमेश नंद आधुनिक नागपुरी साहित्य, झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची, 2014
- पानुरी, श्रीनिवास चाभी काठी, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह बोकारो, 2006
- प्रबुद्ध, महेन्द्र चंदूलाल चौकीदार, उषा पब्लिशिंग हाउस, धनबाद, 2008
- महतो, पंचम मनचरयाँ, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो, 2008

पत्र पत्रिकाओं की सूची :–

- लुआठी – गिरिधारी गोस्वामी 'आकाश खूँटी, बोकारो, 1999
- धरतीथान – शिवनंदन पांडेय 'गरीब, गिरिडीह
- तितकी – डॉ० ए.के. झा, रामगढ़

- तितकी – शांति भारत, बोकारो
- परासफूल – महेन्द्र प्रबद्ध, धनबाद, 2009
- इंजोर – धनंजय प्रसाद, देवघर, 1997
- अखड़ा – वंदना टेटे, झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति, राँची
- गोतिया – डॉ. बीरेन्द्र कुमार महतो, चुटिया, राँची
- छोटानागपुर एक्सप्रेस – डॉ. बीरेन्द्र कुमार महतो, चुटिया, राँची
- करील डॉ. बी. एन. ओहदार, ओरमांझी, राँची, 2009
- खोरठा श्रीनिवास पानुरी, बरवाअड्डा धनबाद, 1970
- तितकी विश्वनाथ दसौंधी राज, कतरासगढ़, धनबाद, 1977.78.
- मातृभाषा श्रीनिवास पानुरी, बरवाअड्डा, धनबाद, 1975
- सहिया अनिल कुमार विस्थापित, बोकारो, 2002,
- सहिदान फाल्गुनी मटीक कुशवाहा, गिरिडीह, 2002.
-

<u>समाचार पत्रों की सूची :–</u>

- राँची एक्सप्रेश, राँची
- झारखंडी नगाड़ा, चास
- आवाज (झारखंड टाइम्स)
- हिन्दुस्तान
- बिहार भूमि, कतरास
- आज, राँची
- छोटानागपुर रश्मि, बोकारो

- दैनिक भास्कर, राँची
- प्रभात खबर, राँची
- अमृतवर्षा, बोकारो

नोटः– प्रस्तावित शोध प्रारूप में आवश्यकतानुसार आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है